# चित्रकूट जनपद की कार्यरत महिलाओं एवं घर में काम करने वाली महिलाओं के आत्म-संबोध एवं पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन

**डा0 मंजू यादव***


## सारांश

शिशू जन्म के समय सामाजिक प्राणी नहीं होता है। जैसे-जैसे उसका शारीरिक और मानसिक विकास होता है। जैसे-जैसे उसका सामाजिक विकास भी होता है। अपने परिवार के सदस्यों, अपने समूह के साथियों, आपके समाज की संस्थाओं और परम्पराओं एवं अपनी स्वयं की रुचियों और इच्छाओं से प्रभावित होकर वह अपने सामाजिक व्यवहार का निर्माण और अपना सामाजिक विकास करता है। पंडित जवाहर लाल नेहरू ने कहा था कि एक बालक को शिक्षित करने का मतलब है। एक व्यक्ति को शिक्षित करना है, जबकि एक बालिका को शिक्षित करने का मतलब सम्पूर्ण परिवार को शिक्षित करना है। महिला समाज में मां, बहिन, पत्नी आदि रूपों में अपनी भूमिका का निर्वहन करती है। यदि वह शिक्षित है तो उसे निराशा हाथ लगती है। शिक्षा के माध्यम से सकारात्मक भूमिका अदा की जा सकती है। शिक्षा के प्रकरण तथा आर्थिक स्थिति के कारण महिला रोजगार के व्यवसाय में बड़ी है। वर्तमान में उनकी संख्या इतनी हो गई है कि कार्यरत महिलाओं का एक वर्ग तैयार हो गया है। अर्थात कार्यरत महिलाओं एवं घर में काम करने वाली महिलाओं में आत्म-संबोध एवं पर्यावरण जागरूकता को इस शोध पत्र द्वार प्रस्तुत किया है।


## प्रस्तावना

बालिका शिक्षा सामाजिक विकास का महत्वपूर्ण अंग है। विद्यालय ही वह संस्था ही जो हमें एक दूसरे की संस्कृति का ज्ञान करवाती है। यही बालिकाऐं स्वाभिमान, आत्म विश्वास और निर्णय लेने की क्षमता और कौशल जैस गुण ग्रहण करती है। शिक्षित मां ही अपने वाली पीढ़ी को कुशल एवं आत्मनिर्भर बना सकती है। बालिकाा शिक्षित होगी तो संतान शिक्षित होगी। तो संतान शिक्षित होगी और परिवार श्रेष्ठ होगा।

स्वतंत्रता से पूर्व भारत में साक्षरता की दर अत्यंत निम्न थी। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हमारे देश में वंचित वर्ग बालिकाओं की शिक्षित करने का व्यापक प्रयास किए गए। भारत में पिछले वर्षों में महिला शिक्षा और साक्षरता में उन्नति की है। जहां वर्ष 1961 में 912 प्रतिशत देश की महिलाएं शिक्षित और सादर थी। वहां 2011 उनका प्रतिशत बढ़कर 565 हो गया।

समाज की एक महत्वपूर्ण इकाई परिवार है, जिसका मेरूदण्ड महिलाएं हैं। उसका समाज पर प्रत्यक्ष व परोक्ष प्रभाव पड़ता है। शिक्षा पर हम विचार करते है, तो पाते है कि महिला शिक्षा हमारी पर्यावरण जागरूकता के लिए महत्वपूर्ण सिद्ध हुई है।

अत: वर्तमान समय अर्थ प्रधान है। शिक्षा के प्रसार तथा आर्थिक दवाब के कारण महिला रोजगार की तरफ बढ़ी है। आज उनकी संख्या इतनी हो गई है कि कार्यरत (सर्विस मैन महिलाओं) का एक वर्ग बन गया है। समाज में मुख्यत: महिलाओं को दो वर्गों में विभाजित किया है।

(1) कार्यरत अर्थात (सर्विस करने वाली महिलाएं)

(2) गैर कामकाजी अर्थात घर में काम करने वाली।

आज की भाग दौड़ वाली जिंदगी में हमने बहुत कुछ पाया, तो काफी कुछ खोया भी है। कहीं आत्मनिर्भर बनने की चाहाने तो, कहीं आर्थिक परिस्थितियों के चलते महिलाओं ने नौकरी की। एक कार्यरत (कामकाजी)महिला में आत्म-सम्बोध पनपा, वही कुछ होने का भाव भी आया। प्रस्तुत शोधा अध्ययन में कार्यरत एवं घर में काम करने वाली महिलाओं का आत्म-संबोध एवं पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन करना ताकि समाज की महिलाओं के प्रति अतिरिक्त गतिविधियों के संबंध में सकारात्मक दृष्टिकोणा का अध्ययन किया जा सके।

## अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :

किसी भी शोध अध्ययन के लिए उनकी समस्या, आवश्यकताा एवं महत्व का परीक्षण जानना आवश्यक है। किसी भी समस्या का शोध कार्य करने से पूर्ण यह जाना आवश्यक है कि विभिन्न दृष्टिकोण से उसका हल कितनाा आवश्यक है। इससे समाज एवं राष्ट्र को कितना काम होगा। जिससे उस समस्या पर शोध कार्य किया जा सके।

*असि0 प्रोफेसार के0आर0 गर्ल्स (पी0जी0)कॉलेज मथुरा (उ0प्र0)

चित्रकूट जनपद, बांदा जिले से अलग होकर नया जिला सृजित हुआ है। यदि यहां की महिला शिक्षा के पिछड़नेपन पर हम विचार करते है तो हम यह पाते है कि उनका स्थान समाज में केवल घर में कामकाज तक रखा जाता है। समाज का दृष्टिकोण उनके पिछड़ेपन का एक कारण ही महिला शिखा के विकास के लिए हम सामन्तवादी दृष्टिकोण के कारण है। स्त्रियों में सामाजिक विसंगतियों, अंधविश्वास, पर्दाप्रथा, बाल विवाह, दहेज प्रथा, कन्या की अपेक्षा लड़के का महत्व अधिक माना जाता है।

अत: बालिका शिक्षा के बिना हमारी सभ्यता का सामाजिक, सांस्कृतिक, राष्ट्रीय उत्थान संभव नहीं है। हम सबको बालिका शिक्षा के लाभ को समझाने की अत्यंत आवश्यकता है। बालिका शिक्षा के प्रति बनी हुई विभिन्न संकीर्ण धारणाओं को बदलने की आवश्यकता है। इस शोध का शैक्षिक दृष्टि से भी काफी महत्व है। प्रस्तुत अध्ययन में अनुसंधित्सु की रूचि कार्यरत एवं घर में काम करने वाली महिलाओं का आत्मसम्बोध एवं पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन करना है। ताकि समाज का महिलाओं के प्रति अतिरिक्त गतिविधियों के संबंध में सकारात्मक एवं धनात्मक मूल्यों का आंकलना किया जा सके। इससे वह एक कुशल योग्य एवं आदर्श नारी बन सके। क्योंकि शिक्षित नारी ही समाज, परिवार एवं पर्यावरण को दिशा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

इस अध्ययन से उनके पारिवारिक, सामाजिक, शैक्षिक, पर्यावरण जागरूकता का मार्ग प्रशस्त होगा। जिससे वे समाज में अपना स्तर कायम करने में सफल होगी। वर्तमान समय में चित्रकुट जनपद की महिलाओं का विभिन्न विभागों में कार्यरत ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं का आत्मसंबोध एवं पर्यावरण जागरूकता तथा पर्यावरण संख्या में लाभ मिलेगा। महिला विकास की अनेक योजनाओं को लागू कर उनके जीवन स्तर में उचित गुणवत्ता का विकास किया जा सके। क्योंकि कल के समाज की नींव बालक और बालिकाएं ही है। इस अध्ययन के फलस्वरूप नारी में आत्मविश्वास तथा पर्यावरण जागरूकता की भावना विकसित हो सकेगी। इस उद्देश्यों से प्रभवित होकर अनुसंधित्सु द्वारा इस समस्या को शोध समस्या के रूप में लेना उचित समझा गया।

## शोध अध्ययन के उद्देश्य :-

प्रस्तुत शोध निम्न उद्देश्यों पर आधारित है।

1. दलित, पिछड़ा, सवर्ण जाति के आधार पर कार्यरत एवं घर में काम करने वाली महिलाओं के आत्म-संबोध एवं पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन करना।
2. पंचायत के आधार पर कार्यरत व घर में काम करने वाली महिलाओं के आत्म-संबोध एवं पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन करना।
3. सामाजिक-आर्थिक आधार पर व्यवसाय करने वाली व घर में काम करने वाली महिलाओं के आत्म-संबोध-पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन करना।
4. जाति के आधार पर कार्यरत एवं घर में काम करने वाली महिलाओं की पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन करना।
5. पंचायत के आधार पर कार्यरत एवं घर में काम करने वाली महिलाओं की पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन करना।
6. सामाजिक आर्थिक आधार पर कार्यरत एवं घर में काम करने वाली महिलाओं की पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन करना।
7. कार्यरत (कामकाजी) एवं घर में काम करने वाली महिलाओं की आत्म-संबोध एवं पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन करना।

## परिकल्पना

इस शोध के अंतर्गत अनुसन्धित्सु के निम्नलिखित परिकल्पनाएं निर्धारित की है।

1. दलित पिछड़ा एवं सवर्ण जाति के आधार पर कार्यरत एवं घर में काम करने वाली महिलाओं के आत्म-संबोध में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. पंचायत के आधार पर कार्यरत एवं घर में काम करने वाली महिलाओं के आत्म संबोधा में सार्थक अंतर नहीं है।
3. सामाजिक एवं आर्थिक स्तर के आधार पर कार्यरत एवं घर में काम करने वाली महिलाओं के आत्म संबोध में सार्थक अंतर नहीं है।
4. वर्ग (निम्न, पिछड़ा, उच्च) के आधार पर कार्यरत एवं घर में काम करने वाली महिलाओं के आत्म संबोध में सार्थक अंतर नहीं है।

5. दलित, पिछड़ा एवं उच्च वर्ग के आधार पर कार्यरत एवं घर में काम करने वाली महिलाओं की पर्यावरण जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है।
6. पंचायत के आधार पर कार्यरत एवं घर में काम करने वाली महिलाओं की पर्यावरण जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है।
7. सामाजिक आर्थिक स्तर के आधार पर कार्यरत व घर में काम करने वाली महिलाओं की पर्यावरण जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है।
8. वर्ग (निम्न व उच्च) के आधार पर कार्यरत एवं घर में काम करने वाली महिलाओं की पर्यावरण जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है।
9. कार्यरत एवं घर में काम करने वाली महिलाओं के आत्म-संबोध एवं पर्यावरण जागरूकता के मध्य सार्थक सह-संबध नहीं है।

## जनसंख्या एवं न्यादर्श

इस शोध हेतु न्यादर्श का चयन चित्रकुट जिले की महिलाओं की कुल जनसंख्या 2,30,120 रु0 यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है। इस प्रस्तुत शोध में न्यादर्श के रूप में 375 महिलाओं को सम्मलित किया गया है।

## समस्या का परिसीमन

समाज में महिलाओं का क्षेत्र बहुत बड़ा है। परन्तु इस शोध की समयावधि को ध्यान में रखते हुए, इस समस्या का परिसीपन निम्नांकित प्रकार से निश्चित किया गया है।

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन में उत्तर प्रदेश रा%य के चित्रकुट जिला मुख्यालय तथा ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं को किया गया।
2. इस अध्ययन में विभिन्न जाति वर्ग व क्षेत्र के 20 वर्ष से 50 वर्ष तक की महिलाओं को सम्मलित किया गया है।
3. प्रस्तुत शोध अध्ययन में शहरी व ग्रामीण क्षेत्र की 125 कामकाजी 250 गैर-कामकाजी महिलाओं के आत्म-संबोध व पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन किया गया है।

## अनुसंधान विधि, प्रविध एवं उपकरण

**अनुसंधान विधि** – प्रस्तुत शोध में अनुसंधित्सु द्वारा सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है।

**सांख्यिकी विधियां** – अनुसंधान हेतु एकत्रित आंकड़ों को सही गणना करने के लिए सांख्यिकीय प्रविधियों जैसे- मध्यपान, प्रमाप, विचलन, टी, परीक्षण का उपयोग किया गया।

**उपकरण**– प्रस्तुत शोध में प्रदत्तों के संग्रह हेतु निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया है।

1. आत्म संबोध प्रश्नावली परीक्षण हेतु।
2. पर्यावरण जागरूकता परीक्षण हेतु।
3. साक्षात्कार सूची।
4. निरीक्षण सूची।

## प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष एवं सुझाव

इस शोध अध्ययन में दत्तों के विश्लेषण और अनुसंधित्सु द्वारा क्षेत्र अध्ययन व महिलाओं से साक्षात्कारा के आधार पर प्राप्त निष्कर्म निम्नलिखित है।

1. सामान्य जाति की कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं में समस्त आयामों जैसे- बौद्धिक, भावनात्मक, चरित्रात्मक, सामाजिक नहीं पाया गया। सामान्य जाति की गैर-कामकाजी महिलाओं में मध्यमान अंतर तो पाया गया। लेकिन सार्थक अंतर नहीं पाया गया। जो अंतर पाया गया व कामकाजी महिलाओं के खुले विचारों के कारण पाया गया है।
2. आरक्षित जाति की कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं में बौद्धिक, चरित्रात्मक, सामाजिक व सौंदर्यकरण आयाम से संबंधित मध्यमान अंतर सार्थक नहीं पया गया।
3. कार्यरत (कामकाजी) व गैर-कामकाजी महिलाओं में जातीय आधार (सामान्य व आरक्षित) पर मध्यमान अंतर सार्थक नहीं पाया गया।
4. शहरी क्षेत्र की कामकाजी व गैर-कामकाजी महिलाओं में बौद्धिक, चरित्रात्मक, सामाजिक सौंदर्यकरण आयाम से संबधित अंतर सार्थक नहीं पाया गया। मध्यमान अंतर सार्थक नहीं पाए जाने का मुख्य कारण शहरी क्षेत्र की महिलाओं का शिक्षित होना मिलनसार अधिक क्रियाशील, साफ सुथरे ढंग से रहना, आकर्षक व अधिक चुस्त होना पाया गया।

5. शहरी क्षेत्र की कार्यरत व गैर-कार्यरत महिलाओं में भावनात्मक आयाम से संबंधित मध्यमान में अंतर सार्थक पाया गया। इसका मुख्य कारण शहरी कामकाजी महिलाएं आर्थिक रूप से अधिक सुदृढ़ व आत्मनिर्भर होने के कारण अधिक प्रसन्नचिन्त व खुशी पायी गई।
6. ग्रामीण क्षेत्र की कामकाजी व गैर-कामकाजी महिलाओं में बौद्धिक, चरित्रात्मक, सामाजिक भावनात्मक व सौंदर्यकरण आयाम से संबंधित मध्यमान में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
7. कामकाजी व गैर-कामकाजी महिलाओं में क्षेत्रीय आधार (शहरी व ग्रामीण) पर मध्यमान अंतर सार्थक पाया गया। इसका मुख्य कारण ग्रामीण क्षेत्र की अपेक्षा शहरी क्षेत्र की कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं का सभी क्षेत्रों में कुशल होना पाया गया।
8. सवर्ण जाति की कार्यरत एवं गैर-कामकाजी महिलाओं की पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अंतर प्राप्त नहीं हुआ।
9. शहरी क्षेत्र के आधार पर कामकाजी व गैर-कामकाजी महिलओं की पर्यावरण जागरूकता में माध्यमान अंतर सार्थक नहीं पाया गया।
10. उच्च वर्ग की कार्यरत एवं घर में काम करने वाली महिलाओं की पर्यावरण जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
11. निम्न वर्ग की कामकाजी व गैर-कामकाजी महिलओं की पर्यावरण जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
12. कार्यरत एवं घर में काम करने वाली महिलाओं की पर्यावरण जागरूकताा एवं आत्म-संबोध के मध्य नगण्य सह-संबध पाया गया।

## सुझाव

1. कार्यरत (कामकाजी) एवं गैर-कामकाजी महिलाओं की पर्यावरण जागरूकता के साथ निर्णय, क्षमता और आत्म-संबोध का अध्ययन करना।
2. कार्यरत एवं घर में काम करने वाली महिलाओं की सामाजिक दक्षता एवं सामाजिक मूलों का अध्ययन करना।
3. कार्यरत एवं घर में काम करने वाली महिलाओं की अभिवृत्ति एवं रुचि का अध्ययन करना।
4. कार्यरत एवं घर में काम करने वाली महिलाओं की भग्नाशा का अध्ययन करना।
5. भारत के अन्य रा%यों में आत्म-संबोध पर्यावरण जागरूकता तथा सामाजिक आर्थिक स्तर पर तुलानात्मक अध्ययन करना।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

Buch, M.B (1986): Third Survey of Research in Education, News Delhi

Government of India (1986) National Education Policy, New Delhi, Ministry of Human Resources Development.

Gupta Sntosh (2005) Reserch Methodology and Statistical Techniques, New Delhi, Deep Publication.

जे0के0 सिंह और मनोज झाझड़िया झुंझनु जिले के व्यवसाय करने वाली व घर में काम करने वाली महिलाओं के आत्म संबोध व जीवन संतुष्टि का अध्ययन-

Young W (2006), Social Support and life Satisfaction Internation Journal Of Psychosocial Rehablitition, 10(2): 155-164.